''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

JAYOTI VIDYAPEETH WOMEN'S UNIVERSITY, JAIPUR

Faculty of Education & Methodology

Faculty Name - JV'n Chanda kumawat
(Assistant Professor)

Program - 5 Semester / Year B.A B.ED

Course Name - HINDI kavya

Session No. & amp; Name - 1.1- 0.1

(हिंदी साहित्य का आधुनिककालीन साठोत्तरी कविता का इतिहास)

Academic Day starts with – 10.8.23 **THURDAY**

PLANNING AND STARTED

(Basic Knowledge For Student)

साठोत्तरी कविता *का तात्पर्य केवल के बाद की* कविता *से नहीं है बल्कि यह एक विशेष तेवर वाली* काव्य प्र ***साठोत्तरी हिन्दी साहित्य*** *हिन्दी साहित्य के इतिहास के अन्तर्गत सन् 1960 ई० के बाद मुख्यतः नवलेखन (नयी कविता, नयी कहानी आदि) युग से काफी हद तक भिन्नता की प्रतीति कराने वाली ऐसी पीढ़ी के*

द्वारा रचित साहित्य है जिनमें विद्रोह एवं अराजकता का स्वर प्रधान था। हालाँकि इसके साथ-साथ सहजता एवं जनवादी चेतना की समानान्तर धारा भी साहित्य-क्षेत्र में प्रवहमान रही जो बाद में प्रधान हो गयी। साठोत्तरी लेखन में विद्रोही चेतनायुक्त आन्दोलन प्राथमिक रूप से कविता के क्षेत्र में मुखर हुई। इसलिए इससे सम्बन्धित सारे आन्दोलन मुख्यतः कविता के आन्दोलन रहे। हालाँकि कहानी एवं अन्य विधाओं पर भी इसका असर पर्याप्त रूप से पड़ा और कहानी के क्षेत्र में भी 'अकहानी' जैसे आन्दोलन ने रूप धारण किया।

साठोत्तरी कविता के प्रमुख कवि कौन है?

मुक्तिबोध, दुष्यन्त कुमार, धूमिल, रघुबीर सहाय, जगदीश चतुर्वेदी, मुद्राराक्षस और कैलाश वाजपेयी **साठोत्तरी कविता के प्रमुख** हस्ताक्षर हैं।

प्रभाव एवं प्रकृति -

साठोत्तरी हिन्दी साहित्य का पहला दशक (1960-70) आधुनिकतावाद से विशेष प्रभावित है। इस संदर्भ में कि आधुनिक और आधुनिकता में अन्तर है। 'आधुनिक' 'मध्यकालीन' से अलग होने की सूचना देता है। 'आधुनिक' वैज्ञानिक आविष्कारों और औद्योगीकरण का परिणाम है जबकि 'आधुनिकता' औद्योगीकरण की अतिशयता, महानगरीय एकरसता, दो महायुद्धों की विभीषिका का फल है। डॉ० बच्चन सिंह के अनुसार "वस्तुतः नवीन ज्ञान-विज्ञान, टेक्नोलॉजी के फलस्वरूप उत्पन्न विषम मानवीय स्थितियों के नये , गैर-रोमैंटिक और अमिथकीय साक्षात्कार का नाम 'आधुनिकता' है।"

आधुनिकतावादी साहित्य एक विशेष प्रकार का साहित्य है। यह स्थापितसंस्कृति, मूल्य और संवेदना को अस्वीकार करती है। यह दुनिया की मान्यताओं को मंजूर नहीं करती , परम्परा को बेड़ी के रूप में लेती है। आधुनिकतावादी अन्तर्यात्रा करता है, वह विद्रोही होता है। भीड़ का विरोध करता है , वह व्यक्ति की मुक्ति का विश्वासी है। वह अपने को अ-मानव की स्थिति में पाता है, और स्नेह , कृतज्ञता आदि को निष्कासित कर देता है। संयम की कमी , प्रयोग, साहित्य रूपों की तोड़-फोड़, शॉक देने की मनोवृत्ति, आक्रोश-क्षोभ-हिंसा की आकांक्षा आदि ।

साठोत्तरी कविता की विशेषताएँ हैं -

- **विघटित व्यवस्था के प्रति आक्रोश**

व्यवस्था ही किसी देश अथवा समाज की पहचान बनाती है उसे स्थायित्व प्रदान करती है किन्तु जब इस व्यवस्था के मूल्यों आदर्शों एवं परंपराओं की अवहेलना कर इसमें मनमाने ढंग से परिवर्तन किए जाते हैं तो या विघटन का शिकार हो जाती है और कोई भी विघटित व्यवस्था कल्याणकारी नहीं हो सकती है। यही कारण है कि साठोत्तरी हिन्दी कविता में भी ऐसी अव्यवस्थित व्यवस्था के प्रति तीव्र आक्रोश एवं असंतोष दिखाई पड़ता है। इस विषम अव्यवस्था को दूर करने का एक ही उपाय है - वह है जनक्रांति।

- **जीवन का वास्तविक निरूपण**

कोई भी रचना तभी जीवन्त और प्राणवान बन सकती है , जब उसका जुड़ाव जीवन से हो। चूँकि रचनाकार अपने परिवेश के प्रति आबद्ध होता है। अतः यह

आवश्यक है कि बदलते मानव मूल्यों के साथ-साथ साहित्य के विधाओं का तेवर भी परिवर्तित हो। साठोत्तरी साहित्य में जीवन की निर्मम वास्तविकताओं को अत्यंत ईमानदारी से निरूपित किया गया है।

- **मोहभंग की स्थिति**

छठें दशक का साहित्य पूर्णतः मोहभंग का साहित्य है। भ्रष्ट व्यवस्था , राजनेताओं की वादाखिलाफी, बढ़ते विदेशी ऋण, पूंजीवादी अधिनायकत्व, भूखमरी, बेरोजगारी, कालाबाजारी, आदि समस्याओं ने आम आदमी के मन में असंतोष एवं आक्रोश की भावना को ही उपजाया। धूमिल ने आजादी पर व्यंग्य करते हुए लिखा है-

क्या आज़ादी सिर्फ़ तीन थके हुए रंगों का नाम है

जिन्हें एक पहिया ढोता है

या इसका कोई खास मतलब होता है?

- **जनवादी चेतना की विस्तृत व्यंजना**

साठोत्तरी साहित्य में आस्था और अनास्था दोनों का संकुल चित्रण मिलता है।जनवाद के मूल में सर्वहारा वर्ग की मुक्ति और संघर्ष के लिए किए गए सचेत प्रयास एवं वर्गविहीन समाज की परिकल्पना प्रमुख है। वहीं साठोत्तरी साहित्य की भाषा अभिजात्य और संस्कार की भाषा नहीं है अपितु अनुभवों की मिट्टी में तपी-निखरी आम बोलचाल की भाषा है।

निष्कर्ष स्वरूप -

साठोत्तरी साहित्य के समस्त प्रवृत्तियों के परिशीलन के उपरांत कहा जा सकता है कि यह साहित्य युगीन सच को प्रस्तुत करने वाला साहित्य है। परिवेश का सच्चा और बेबाक चित्रण यही हुआ है। यहां मुक्ति की आकांक्षा भी है और भ्रष्ट व्यवस्था के प्रति विक्षोभ भी।